दिनांक
23-8-20

वेदविभाग
शास्त्री III वर्ष:
प्रातिशाख्यम्:
प्रथमोऽध्याय:

① सूत्र: →
" उपदिष्टा वर्णा: "

व्याख्या: →
अब यहां महर्षि के द्वारा उपदिष्ट वर्ण कहे गए हैं अर्थात्
" अथर्माद्याम्नाये वर्णा उपदिष्टा एव । अतो नोत्पन्ते । यथा पदेषु सङ्ख्योपदिष्टा वर्णा वेदितव्या: तद्यथा - "इषे" इकार - षकार - एकारा: इति त्रिवर्णं पदम् । उक्तं च -

" स्वरो वर्णोऽक्षरं मात्रा तत्प्रयोगार्थ एव च ।
मन्त्रं जिज्ञासमानेन वेदितव्यं पदे पदे ॥

वर्ण समाम्नाय में वर्ण कहे गए हैं जैसे - क, ख, ग, घ, ङ - कवर्ग । अथवा पदों में जो वर्ण उपदिष्ट हैं उन्हें ही जानना चाहिए । अन्य वर्ण विधान से होगा । जैसे - "इषे त्वा " में । यहां पर संहिता में भी अन्य वर्ण नहीं हैं । विधान से संहिता में विकार होंगे, उनको वहीं पर कहेंगे । अथवा पदों में संख्या की दृष्टि से वर्णों का उच्चारण करना चाहिए जैसे - "इषे" यह तीन वर्णों वाला पद है ।

"त्वा" यह भी तीन वर्णों वाला पद है। "उर्जे" यह पाँच वर्णों वाला पद है, कहा भी गया है -

"मन्त्र को जानने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को प्रत्येक स्थल पर स्वर, वर्ण, अक्षर, मात्रा विनियोग और अर्थ को जानना चाहिए।"

इति।

Ankit Shukla
वेद विभाग
23-8-20